ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे **निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून**

वर्षः 26 अंकः 80 बुलेटिन अवधिः 14–18 अक्टूबर, 2017 दिनः शुक्रवार दिनाँकः 13 अक्टूबर, 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल				
	14–10–2017	15–10–2017	16–10–2017	17–10–2017	18–10–2017
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	22	22	22	21	21
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	12	12	11	11	11
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	80	80	80	80	80
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	45	45	45	45
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	008	008	006	006	008
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–उत्तर–पश्चिम	पूर्व–दक्षिण–पूर्व

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (**06** से 12 **अक्टूबर,** 2017 सुबह 8:30 तक) में हल्के और मध्यम बादल छाये रहे तथा अधिकतम तापमान 20.8 से 22.8 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 11.6 से 13.8 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- ❖ धान की फसल में जीवाणु झुलसा रोग की रोकथाम के लिए स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 15 ग्राम + कॉपर आक्सीक्लोराइड 500 ग्राम/है0 की दर से छिड़काव करें।
- ❖ गन्ने के तीन झुण्डों को को आपस में मिलाकर बधाई करें।
- ❖ धान फसलो मे खरपतवार नियंत्रण तथा पानी रोकने की उचित व्यवस्था करे।

- धान में तना वेधक व पत्ति मरोड़क का प्रकोप होने पर क्लोरान्ट्रनिलिप्रोल 0.4 जी को 10000 ग्राम/है0 या फिप्रोनिल 0.3 जीआर 25000 ग्राम/है0 या कारटाप 4 जीआर 18750 ग्राम /है0 की दर से छिड़काव रोपाई से 50 दिन के अन्दर करें।
- भूरा फुदका या सफेद पीठ वाला फुदका (तेला) का प्रकोप हो तो बुप्रोफेजिन 25 एससी 1 लीटर/है0 या फिप्रोनिल 5 एससी 1 लीटर /है0 या क्लोथियानिडिन 50 डब्लूडीजी 30 गग्रम/है0 या थयामेथोक्जाम 25 डब्लूएसजी 100ग्राम /है0 की दर से 500 लीटर पानी में घोलकर पौधों के तने पर छिड़काव करें।

उद्यान प्रबन्धः

- सेब, नाशपाती, आड़ू, प्लम इत्यादि फल वृक्षों की गिरी पत्तियों को इकट्ठा करके गड्ढे में डाले तथा बीमार एवं रोगग्रसित पत्तियों को जलाकर नष्ट कर दें।
- शीतोष्ण फल वृक्षों के थालों की सफाई करना प्रारम्भ करें। तथा नये बगीचे लगाने के लिए लेआउट का कार्य प्रारम्भ करें।
- रूट स्टॉक के लिए आड़ू तथा सेब के बीजो की बुवाई करें।
- माल्टा, संतरा एवं काग्जी नीबू के पौधों के प्रवर्धन के लिए बीजों की बुवाई करें।
- लीची के फल वृक्षों की जड़ खोलकर 50–60 कि0ग्रा0 गोबर की खाद, 2.25 कि0ग्रा0 सिंगल सुपर फॉसफेट (एस0एस0पी), 1 कि0ग्रा0 पोटैशियम सल्फेट/फलत वाले वृक्षो को डालकर सिंचाई करें।
- ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रों में सब्जी मटर की फसल या तो फूल आने की अवस्था में होगी या लगभग फूल आ चुकें होंगे, में गुड़ाई के प''चात् दो पंक्तियों के बीच में पड़ी खाली जगह में नमी संरक्षण हेतु एक से दो से0मी0 मोटी पलवार पदार्थ की परत बना लें। इससे न केवल सब्जियाँ अच्छी गुणवत्ता वाली होंगी अपितु उत्पादन में भी 20–40 प्रति''ात की वृद्धि होगी। इसी तरह की तकनीक को मूली, गाजर एवं शलजम सब्जियों में भी अपनाएँ।
- तैयार खेतों में तथा पॉलीहाउस के भीतर लगी सब्जी राई की पौंध प्रतिरोपण हेतु तैयार है तो अपराहन के समय 50 x 40 से0मी0 की दूरी पर प्रतिरोपण करें।
- घाटी क्षेत्रों में यदि खेत तैयार हो तो आलू की कूफरी अशोक या कूफरी ज्योति किस्म की बुवाई करें। ध्यान रहे की खेत अधिक गीले न हों।
- टमाटर की फसल में पत्तियां सिकुड़ने की अवस्था में प्रभावित पौधों को निकालकर नष्ट कर दें एवं किसी सर्वांगी कीटनाशी का छिड़काव करें।
- मध्यम पर्वतीय क्षेत्रों में बैंगन एवं शिमलामिर्च के फलों की तुड़ाई करें तथा रोग युक्त फलो/पत्तियों या पौंध अवशेषों को खेत से बाहर करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उस से सही उत्पादन प्राप्त हो सके।
- इस माह में जानवरों में खासकर भैसों में प्रसव दर अधिक बढ़ जाती है इसको ध्यान में रखते हुए पषुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोषनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें।
- मुर्गियों में फफूँदजनित आहार देने से अपलाटॉक्सीकोषिष हो जाती है जिसकी वजह से काफी संख्या में उनकी मृत्यु होने की संभावना होती है। ऐसे में मुर्गियों को पषुचिकितसक की सलाह से दवा दें।
- पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिफैरी) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते है।
- पशुओं को गलघोटू रोग से बचाने के लिए जानवरों को साफ–सुथरे स्थान पर बांधे तथा आस–पास बरसात का पानी इकट्ठा ना होने दें। गलघोटू रोग के लक्षण जैसे घर–घर की आवाज होना, श्वास भूलना, तेज बुखार होना, नाक से स्त्राव होना, आँखें लाल होना ऐसे लक्षण दिखें तो तत्काल निकटतम पशुचिकित्सक से संपर्क करें। तत्काल उपचार हेतु सल्फा की दो बोलस दें।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विष्वविद्यालय, पन्तनगर